

श्री जिन-स्तवन

(गजल कव्वाली)

घडी धन आजकी येडी, सरा सभ काज भो मनका;
गये अध दूरि सभ लजके, लभ्या मुष आज जिनवरका. (टेक)

विपत्ति नासी सभ मेरी, लरा लंडार सम्पतिका;
सुधा के मेघ हूं बरसे, लभ्या मुष आज जिनवरका. १

लई परतीत है मेरे, सडी डो देव देवनके;
कटी मिथ्यात्व की डोरी, लभ्या मुष आज जिनवरका. २

विरद औसा सुना में तो, जगत के पार करनेका;
“सेवक” आनन्द हूं पायो, लभ्या मुष आज जिनवरका. ३

